योगसार प्राभृत (फोल्डर नं. ००१८४०)
आचार्य अमितगति विरचित
सिद्धान्तचक्रवर्ती वसुनन्दि-कृत आचारवृत्ति सहित
सम्पादक एवं भाष्यकार – जुगलकिशोर मुख्तार

मुख्य टाइटल
General Editorial
प्रधान सम्पादकीय
संकेताक्षर सूची
प्रस्तावना
विषयसूचि
१. जीवाधिकार
भाष्यका मंगलाचरण ---------- २
मूलका मंगलाचरण और उद्देश्य ---------- ३
स्वरूप-जिज्ञासासे जीवाजीव-लक्षणको जाननेकी सहेतुक प्रेरण ---------- ४
जीवाजीव-स्वरूपको वस्तुतः जाननेका फल ---------- ५
स्वरूपको परद्रव्य-बहिर्भूत जाननेका परिणाम ---------- ६
जीवका लक्षण उपयोग और उसके दर्शनज्ञान दो भेद ---------- ६
दर्शनके चार भेद और उसका लक्षण ---------- ७
ज्ञानका लक्षण और उसके आठ भेद ---------- ७
केवलज्ञान-दर्शनादिके उदयमें कारण ---------- ८
केवलज्ञान-दर्शनकी युगपत् और शेषकी क्रमशः उत्पत्ति ---------- ९
मिथ्याज्ञान-सम्यग्ज्ञानके कारणोंका निर्देश ---------- ९
मिथ्यात्वका स्वरूप और उसकी लीलाका निर्देश ---------- १०
दर्शनमोहके उदयजन्य-मिथ्यात्वके तीन भेद ---------- १०
मिथ्यात्व-भावित-जीवकी मान्यता ---------- ११
सम्यक्त्वका स्वरूप और उसकी क्षमता ---------- ११
सम्यक्त्वके क्षायिकादि भेद और उनमें साध्य-साधनता ---------- ११
आत्मा और ज्ञानका प्रमाण तथा ज्ञानका सर्वगतत्व ---------- १२
आत्मासे ज्ञान-ज्ञेयको अधिक माननेपर दोषापत्ति ---------- १६
ज्ञेय-क्षिप्त-ज्ञानकी व्यापकताका स्पष्टीकरण ---------- १६
ज्ञेयको जानता हुआ ज्ञान ज्ञेयरूप नहीं होता ---------- १७
ज्ञानस्वभाव से दूरवर्ती पदार्थोंको भी जानता है। ---------- १८
ज्ञान स्वभावसे स्व-परको जानता है ---------- १८
क्षायिक-क्षायोपशमिक ज्ञानोंकी स्थिति ---------- १९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवलज्ञानकी त्रिकालगोचर सभी सत्-असत्-पदार्थोंको युगपत् जाननेमें प्रवृत्ति ------------------- १९
सत् और असत् पदार्थो कौन?--१९
भूत-भावी पदार्तोंको जाननेका रूप -- २०
ज्ञानके सब पदार्तोंमें युपदत् प्रवृत्त न होनेसे दोषापत्ति --- २०
आत्माके घातिकर्म-क्षयोत्पन्न-परमरूपकी श्रद्धाका पात्र ---२१
आत्माके परमरूप श्रद्धानीको अव्ययपद-की प्राप्ति -- २२
आत्माके परमरूपकी अनुभूतिका मार्ग --- २२
श्रुतके द्वारा भी केवल-सम आत्मबोधकी प्राप्ति -- २३
आत्माके सम्यक् चारित्र कब होता है -- २४
ज्ञानके कषाय-वश होनेपर अहिंसादि कोई व्रत नहीं ठहरता ----------------------------------- २५
ज्ञानके आत्मरूप-रत होनेपर हिंसादिक पापोंका पलायन --------------------------------------- २५
आत्माके निर्मलज्ञानादिरूपध्यानसे कर्मच्युति -- २६
पर-द्रव्य-रत-योगीकी स्थिति -- २६
निश्चय-चारित्रका स्वरूप -- २६
व्यवहार-सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रका रूप -- २७
स्वभाव-परिणत आत्मा ही वस्तुतः मुक्ति-मार्ग -- २७
निश्चयसे आत्मा दर्शनज्ञान-चारित्ररूप -- २८
आत्मोपासनासे भिन्न शिव-सुख-प्राप्तिका कोई उपाय नहीं ------------------------------------ २९
आत्मस्वरूपकी अनुभूतिका उपाय -- २९
विवक्षित-केवलज्ञानसे भिन्न आत्माका कोई परमरूप नहीं ------------------------------------ २९
परवस्तुमें अणुमात्र भी राग रखनेका परिणाम --- ३०
परमेष्ठिरूपकी उपासना परम पुण्यबन्धकी हेतु --- ३०
कर्मास्रवको रोकनेका अनन्य उपाय ---३१
परद्रव्योपासक मुमुक्षुओंकी स्थिति ---३१
परद्रव्य-विचिन्तक और विविक्तात्मविचिन्तककी स्थिति -------------------------------------- ३२
विविक्तात्माका स्वरूप --- ३२
आत्माके स्वभावसे वर्ण-गंधादिका अभाव --- ३२
शरीर-योगसे वर्णादिकी स्थितिका स्पष्टीकरण -- ३३
रागादिक औदयिक भावोंको आत्माके स्वभाव माननेपर आपत्ति ------------------------------- ३३
जीवके गुणस्थानादि २० प्ररूपणाओंकी स्थिति -- ३४
क्षायोपशमिक-भाव भी शुद्धजीवके रूप नहीं --- ३५
कौन योगी कब किसका कैसे चिन्तन करता हुआ मुक्तिको प्राप्त होता है ---------------------- ३६
२. अजीवाधिकार
अजीव-द्रव्योंके नाम -- ३७
पाँचों अजीव-द्रव्योंकी सदा स्व-स्वभावमें स्थिति --- ३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अजीवोंमें कौन अमूर्तिक, कौन मूर्तिक और मूर्ति-लक्षण -- ३८
जीव-सहित पाँचों अजीवोंकी द्रव्यसंज्ञा -- ३९
द्रव्यका व्युत्पत्तिपरक लक्षण और सत्तामय स्वरूप -- ४०
सर्व-पदार्थगत-सत्ताका स्वरूप -- ४०
द्रव्यका उत्पाद-व्य पर्यायकी अपेक्षासे -- ४१
गुण-पर्यायके बिना द्रव्य और द्रव्यके बिना गुण-पर्याय नहीं ---------------------------------- ४१
धर्माधर्मादि द्रव्योंकी प्रेदश-व्यवस्था -- ४२
परमाणुका लक्षण -- ४२
आकाश और पुद्गलोंकी प्रदेश-संख्या -- ४४
कालाणुओंकी संख्या और अवस्थिति-- ४४
धर्म-अधर्म तथा पुद्गलोंकी अवस्थिति -- ४४
संसारी जीवोंकी लोकस्थिति और उनमें संकोच-विस्तार --------------------------------------- ४५
जीव-पुद्गलोंका अन्यद्रव्यकृत उपकार -- ४६
संसारी और मुक्त जीवका उपकार -- ४६
संसारी जीवोंका पुद्गलकृत उपहार -- ४७
परमार्थसे कोई पदार्थ किसीका कुछ नहीं करता -- ४७
पुद्गलके चार भेद और उनकी स्वरूपव्यवस्था -- ४८
किस प्रकारके पुद्गलोंसे लोक कैसे भरा हुआ है --- ४९
द्रव्यके मूर्तामूर्त दो भेद और उनके लक्षण -- ४९
कौन पुद्गल किसके साथ कर्मभावको प्राप्त होते हैं -- ५०
योग-द्वारा समायात-पुद्गलोंके कर्मरूप परिणमनमें हेतु -- ५१
आठ कर्मोंके नाम -- ५१
जीव कल्मषोदय-जनित भावका कर्ता न कि कर्मका -- ५१
कर्मोंकी विविधरूपसे उत्पत्ति कैसे होती है -- ५२
जीव कभी कर्मरूप और कर्म जीवरूप नहीं होते -- ५३
जीवके उपदान-भावसे कर्मोंके करने पर आपत्ति -- ५३
उक्त दोनों मान्यताओंपर अनिवार्यदोषापत्ति -- ५४
पुद्गलोंके कर्मरूप और जीवोंके सरागरूप परिणामके हेतु -- ५५
कर्मकृत-भावका कर्तृत्व और जीवका अकर्तृत्व -- ५५
कर्मसे भाव और भावसे कर्म इस प्रकार एक दूसरेका कर्तृत्व ---------------------------------- ५६
क्रोधादिकृत-कर्मको जीवकृत कैसे कहा जाता है -- ५६
कर्मजनित देहादिक सब विकार चैतन्य रहित हैं -- ५७
त्रयोदश गुणस्थान और उनकी पौद्गलिकता -- ५७
उक्त गुणस्थानोंको कौन जीव कहते हैं और कौन नहीं -- ५८
प्रमत्तादि-गुणस्थानोंकी वन्दनासे चेतन मुनि वन्दित नहीं ------------------------------------ ५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वन्दानाकी उपयोगिता -- ५९
अचेतन-देहके स्तुत होनेपर चेतनात्मा स्तुत नहीं होता -- ६०
विभिन्नताका एक सिद्धान्त और उससे चेतनकी देहसे भिन्नता ------------------------------- ६०
जो कुछ इन्द्रियगोचर वह ब आत्मबाह्य-- ६१
इन्द्रियगोचर-रूपका स्वरूप -- ६१
राग-द्वेषादि-विकार सब कर्मजनित --- ६२
जीव कभी कर्मरूप और कर्म कभी जीवरूप नहीं होता -- ६२
आत्माको द्रव्यकर्मका कर्ता माननेपर दोषापत्ति -- ६३
कर्मोदयादि-संभव-गुण सब अचेतन -- ६३
अजीव-तत्त्वको यथार्थ जाने बिना स्व-स्वभावोपलब्धि नहीं बनती ---------------------------- ६४
३. आस्रवाधिकार
आस्रवके सामान्य हेतु -- ६५
आस्रवके विशेष हेतु--- ६६
मोहको बढ़ानेवाली बुद्धि -- ६६
उक्त बुद्धिसे महाकर्मास्रव -- ६७
एक दूसरी बुद्धि जिससे मिथ्यात्व नहीं छूट पाता -- ६७
कर्मास्रवकी हेतुभूत एक तीसरी बुद्धि --- ६७
चौथी बुद्धि जिससे कर्मास्रव नहीं रुकता -- ६८
निश्चय और व्यवहारसे आत्माका कर्तृत्व -- ६८
जीव-परिणामाश्रित कर्मास्रव, कर्मोदयाश्रित जीव परिणाम ------------------------------------ ६८
किसका किसके साथ कार्य-कारणभाव -- ६९
कर्मको जीवका कर्ता माननेपर आपत्ति -- ६९
एकके किये हुए कर्मके फलको दूसरे के भोगनेपर आपत्ति -------------------------------------- ६९
कर्म कैसे जीवका आच्छादक होता है -- ७०
कषाय-स्रोतस आया हुआ कर्म जीवमें ठहरता है -- ७०
निष्कषाय-जीवके कर्मास्रव माननेपर दोषापत्ति -- ७०
एक द्रव्यका परिणाम दूसरेको प्राप्त होने पर दोषापत्ति -- ७१
पाँचवीं बुद्धि जिससे कर्मास्रव नहीं रुकता -- ७१
स्वदेह-परदेहके अचेतनत्वको न जाननेका फल -- ७२
परमें आत्मीयत्व-बुद्धिका कारण -- ७२
कौन किससे उत्पन्न नहीं होता -- ७२
कषाय-परिणाम किसके होते हैं और अपरिणामीका स्वरूप ------------------------------------- ७३
परिणामको छोड़कर जीव-कर्मके एक दूसरेके गुणोंका कर्तृत्व नहीं ------------------------------ ७३
पुद्गलापेक्षिक जीवभावोंकी उत्पत्ति और औदयिक भावोंकी स्थिति ------------------------------ ७४
निरन्तर रजोग्राही कौन?--७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कौन स्वपर-विवेकको प्राप्त नहीं होता -- ७४
कर्म-संतति-हेतु अचारित्रका स्वरूप -- ७५
राग-द्वेषसे शुभाशुभ-भावका कर्ता अचारित्री -- ७५
स्व-चारित्रसे भ्रष्ट कौन? --७६
स्वचारित्रसे भ्रष्ट चतुर्गतिके दुःख सहते हैं --- ७६
देवेन्द्रोंका विषय-सुख भी दुःख है-- ७६
इन्द्रियजन्य सुख दुःख क्यों है? -- ७७
सांसारिक सुखको दुःख न माननेवाला अचारित्री -- ७७
पुण्य-पापका भेद नहीं जाननेवाला चारित्रभ्रष्ट -- ७७
कौन सच्चारित्रका पालन करता हुआ भी कर्मोंसे नहीं छूटता ------------------------------ ७८
बन्धका कारण वस्तु या वस्तुसे उत्पन्न दोष -- ७८
शुद्ध स्वात्माकी उपलब्धि किसे होती है -- ७९
४. बन्धाधिकार
बन्धका लक्षण -- ८०
प्राकृति-स्थित्यादिके भेदसे कर्मबन्धके चार भेद -- ८०
चारों बन्धोंका सामान्य रूप -- ८०
कौन जीव कर्म बाँता है और कौन नहीं बाँधता --८१
पूर्वकथनका उदाहरणों-द्वारा स्पष्टीकरण --८१
अमूर्त आत्माका मरणादि करनेमें कोई समर्थ नहीं, फिर भी मरणादिके परिणामसे बन्ध ------- ८२
मरणादिक सब कर्म-निर्मित, अन्य कोई करने-हरनेमें समर्थ नहीं ----------------------------- ८३
जिलाने-मारने आदिकी सब बुद्धि मोहकल्पित -- ८३
कोई किसीके उपकार-अपकारका कर्ता नहीं, कर्तृत्वबुद्धि मिथ्या ------------------------------- ८४
चारित्रादिकी मलिनताका हेतु मिथ्यात्व -- ८५
मलिन चारित्रादि दोषके ग्राहक हैं --- ८५
अप्रासुक द्रव्यको भोगता हुआ भी वीतरागी अबन्धक --------------------------------------- ८६
न भोगता हुआ भी सरागी पाप-बन्धक -- ८६
विषयोंका संग होनेपर भी ज्ञानी उनसे लिप्त नहीं होता ------------------------------------- ८६
नीरागी योगी परकृतादि अहारादिसे बन्धको प्राप्त नहीं होता ---------------------------------- ८७
पर-द्रव्यगत-दोषसे नीरागीके बँधनेपर दोषापत्ति -- ८७
वीतरागी-योगी विषयको जानता हुआ भी नहीं बँधता -- ८७
ज्ञानी जानता है वेदता नहीं, अज्ञानी वेदता है जानता नहीं ------------------------------------ ८८
ज्ञान और वेदनमें स्वरूप-भेद -- ८८
अज्ञानमें ज्ञान और ज्ञानमें-अज्ञान-पर्याय नहीं है --- ८८
ज्ञानी कल्मषोंका अबन्धक और अज्ञानी बन्धक होता है ------------------------------------- ८९
कर्मफलको भोगनेवाले ज्ञानी-अज्ञानीमें अन्तर -- ८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्म-ग्रहणका तथा सुगति-दुर्गति-गमनका हेतु ---------- ९०
संसार-परिभ्रमणका हेतु और निर्वृत्तिका उपाय ---------- ९०
रागादिसे युक्त जीवका परिणाम ---------- ९१
कौन परिणाम पुण्य, कौन पाप, दोनोंकी स्थिति ---------- ९१
पुण्य-पाप-फलको भोगते हुए जीवकी स्थिति ---------- ९२
पुण्य-पापके वश अमूर्त भी मूर्त हो जाता है ---------- ९२
उदाहरण-द्वारा स्पष्टीकरण ---------- ९२
पुण्य बन्धके कारण ---------- ९३
पाप-बन्धके कारण ---------- ९४
पुण्य-पापमें भेद-दृष्टि ---------- ९४
पुण्य-पापमें अभेद-दृष्टि ---------- ९४
निर्वृतिका पात्र योगी ---------- ९५

५. संवराधिकार

संवरका लक्षण और उसके भेद ---------- ९६
भाव तथा द्रव्य-संवरका स्वरूप ---------- ९६
कषाय और द्रव्यकर्म दोनोंके अभावसे पूर्णशुद्धि ---------- ९६
कषाय-त्यागकी उपयोगिताका सहेतुक निर्देश ---------- ९७
कषाय-क्षपणमें समर्थ योगी ---------- ९७
मूर्त-पुद्गलोंमें राग-द्वेष करनेवाले मूढ बुद्धि ---------- ९८
किसीमें रोष-तोष न करनेकी सहेतुक प्रेरणा ---------- ९८
अपकार-उपकार बननेपर किसमें राग-द्वेष किया जावे? ---------- ९९
शरीरका निग्रहानुग्रह करनेवालोंमें राग-द्वेषा कैसा? ---------- ९९
अदृश्य-आत्माओंका निग्रहानुग्रह कैसे? ---------- ९९
शरीरको आत्माका निग्रहानुग्राहक मानना व्यर्थ ---------- १००
किसीके गुणोंको करने-हरनेमें कोई समर्थ नहीं ---------- १००
ज्ञानादिक-गुणोंका किसीके द्वारा हरण सृजन नहीं ---------- १००
शरीरादिक व्यवहारसे मेरे हैं, निश्चयसे नहीं ---------- १०१
दोनों नयोंसे स्व-परको जाननेका फल ---------- १०१
द्रव्य-पर्यायकी अपेक्षा कर्म-फल-भोगकी व्यवस्था ---------- १०२
आत्मा औदयिक भावोंके द्वारा कर्मका कर्ता तथा फलभोक्ता ---------- १०३
इन्द्रिय-विषय आत्माका कुछ नहीं करते ---------- १०३
द्रव्यके गुण-पर्याय संकल्प-बिना इष्टानिष्ट नहीं होते ---------- १०४
निन्दा-स्तुति-वचनोंसे रोष-तोषको प्राप्त होना व्यर्थ ---------- १०४
मोहके दोषसे बाह्यवस्तु सुख-दुःखकी दाता ---------- १०४
वचन-द्वारा वस्तुतः कोई निन्दित या स्तुत नहीं होता ---------- १०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर-दोष-गुणोंके कारण हर्ष-विषाद नहीं बनता -- १०५
परके चिन्तनसे इष्ट-अनिष्ट नहीं होता --- १०५
एक दूसरके विकलप्से वृद्धि-हानि मानने पर आपत्ति -- १०५
वस्तुतः कोई द्रव्य इष्ट-अनिष्ट नहीं -- १०६
स्वयं आत्मा परद्रव्यको श्रद्धानादिगोचर करता है -- १०६
मोह अपने संगसे जीवको मलिन करता है --- १०७
मोहका विलय हो जाने पर स्वरूपकी उपलब्धि --- १०७
जो मोहका त्यागी वह अन्य सब द्रव्योंका त्यागी --- १०७
परद्रव्यमें राग-द्वेष-विधाताकी तपसे शुद्धि नहीं होती -- १०८
कर्म करता और फल भोगता हुआ आत्मा कर्म बाँधता है --- १०८
सारे कर्मफलको पौद्गलिक जाननेवाला शुद्धात्मा बनता है -- १०८
शुद्धज्ञाता परके त्याग-ग्रहणमें प्रवृत्त नहीं होता --- १०९
सामायिकादि षट् कर्मोंमें सभक्ति-प्रवृत्तके संवर-- १०९
सामायिकका स्वरूप -- १०९
स्तवका स्वरूप -- ११०
वन्दनाका स्वरूप -- ११०
प्रतिक्रमणका स्वरूप -- १११
प्रत्याख्यानका स्वरूप --- १११
कायोत्सर्गका स्वरूप -- १११
सम्यग्ज्ञानपरायण आत्मज्ञ-योगी कर्मोका निरोधक --११२
कोई द्रव्से भोजक तो भावसे अभोजक, दूसरा इसके विपरीत ----------------------------------११२
द्रव्य-भावसे निवृत्तोंमें कौन किसके द्वारा पूज्य --११३
भावसे निवृत्त होनेकी विशेष प्रेरणा ---११३
शरीरात्मक लिंग मुक्तिका कारण नहीं --- ११४
मुमुक्षुके लिए त्याज्य और ग्राह्य -- ११४
कौन योगी शीघ्र कर्मोका संवर करता है --- ११५

६. निर्जराधिकार

निर्जराका लक्षण और दो भेद --- ११६
पाकजा-अपाकजा निर्जराका स्वरूप -- ११६
अपाकजा निर्जराकी शक्तिका सोदाहरण-निर्देश -- ११६
परमनिर्जरा-कारक ध्यान-प्रक्रमका अधिकारी --- ११७
कौन योगी कर्मसमूहकी निर्जराका कर्ता -- ११७
संवरके बिना निर्जरा वास्तविक नहीं --- ११७
किसका कौन ध्यान कर्मोका क्षय करता है ---११८
कौन योगी सारे कर्ममलको दो डालता है ---११८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशुद्धभावका धारी कर्मक्षयका अधिकारी -- ११९
शुद्धात्मतत्त्वको न जाननेवालेका तप कार्यकारी नहीं --- ११९
किस संयमसे किसके द्वारा कर्मकी निर्जरा होती है --- ११९
कौन योगी कर्मरचको स्वयं धुन डालता है -- १२०
लोकाचारको अपनानेवाले योगीका संयम क्षीण होता है --- १२०
अर्हद्वचनकी श्रद्धा न करनेवाला सुचारित्री भी शुद्धिको नहीं पाता -------------------------------- १२०
जिनागमको न जानता हुआ संयमी अन्धेके समान --१२१
किसका कौन नेत्र --१२१
आगम प्रदर्शित सारा अनुष्ठान किसके निर्जराका हेतु -- १२२
अज्ञानी-ज्ञानीके विषय-सेवनका फल --- १२२
कर्मफलको भोगते हुए किसके बन्ध और किसके निर्जरा-- १२२
निष्किंचन योगीभी निर्जराका अधिकारी -- १२३
विविक्तात्माको छोड़कर अन्योपासककी स्थिति --- १२३
स्वदेहस्थ-परमात्माको छोड़कर अन्यत्र देवोपासककी स्थिति ------------------------------------ १२३
कौन कर्म-रज्जुओंसे बँधता और कौन छूटता है --- १२४
प्रमादी सर्वत्र पापोंसे बँधता और अप्रमादी छूटता है --- १२४
स्वनिर्मल तीर्थको छोड़कर अन्यको भजनेवालोंकी स्थिति -------------------------------------- १२४
स्वात्मज्ञानेच्छुकक परीषहोंका सहना आवश्यक --- १२५
सुख-दुःख में अनुब्धनका फल-- १२५
आत्मशुद्धिका साधन आत्मज्ञान, अन्य नहीं -- १२६
परद्रव्यसे आत्मा स्पृष्ट तथा शुद्ध नहीं होता --- १२६
स्वात्मरूपकी भावनाका फल परद्रव्यका त्याग -- १२६
आत्मद्रव्यको जाननेके लिए परद्रव्यका जानना आवश्यक -------------------------------------- १२७
जगत्के स्वभावकी भावनाका लक्ष्य --- १२७
एक आश्चर्यकी बात --- १२७
ज्ञानकी आराधना ज्ञानको, अज्ञानकी अज्ञानको देती है -- १२८
ज्ञानके ज्ञात होनेपर ज्ञानी जाना जाता है -- १२८
ज्ञानानुभवसे हीनके अर्थज्ञान नहीं बनता -- १२९
जिस परोक्षज्ञानसे विषयकी प्रतीति उससे ज्ञानीकी प्रतिति क्यों नहीं?------------------------------१२९
जिससे पदार्थ जाना जाय उससे ज्ञानी न जाना जाय, यह कैसे?-----------------------------------१२९
वेद्यको जानना वेदकको न जानना आश्चर्यकारी --- १३०
ज्ञेयके लक्ष्यसे आत्माके शुद्धरूपको जानकर ध्यानेका फल ------------------------------------ १३०
पूर्वकथनका उदाहरण-द्वारा स्पष्टीकरण -- १३०
आत्मोपलब्धिपर ज्ञानियोंकी सुख-स्थिति ---१३१
आत्मतत्त्वरतोंके द्वारा परद्रव्यका त्याग --१३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशोधित ज्ञान तथा अज्ञानकी स्थिति--१३१
निर्मल-चेतनमें मोहके दिखाई देनेका हेतु -- १३२
शुद्धिके लिए ज्ञानाराधनमें बुद्धिको लगानेकी प्रेरणा -- १३२
निर्मलताको प्राप्त ज्ञानी अज्ञानको नहीं अपनाता -- १३२
विद्वानके अध्ययनादि कार्योंकी दिशाका निर्देश -- १३३
योगीका संक्षिप्त कार्यक्रम और उसका फल --- १३३
७. मोक्षाधिकार
मोक्षका स्वरूप -- १३५
आत्मामें केवलज्ञानका उदय कब होता है -- १३५
दोषोंसे मलिन आत्मामें केवलज्ञान उदित नहीं होता -- १३६
मोहादि-दोषोंका नाश शुद्धात्मध्यानके बिना नहीं होता -- १३६
ध्यान-व्रजसे कर्मग्रन्थिका छेद अतीवानन्दोत्पातक --- १३६
किसी केवलीकी कब धर्मदेशना होती है -- १३७
ज्ञान किस प्रकार आत्मा का स्वभाव है -- १३८
आत्माका चैतन्यरूप क्यों स्वकार्यमें प्रवृत्त नहीं होता -- १३८
प्रतिबन्धकके बिना ज्ञानी ज्ञेय-विषयमें अज्ञ नहीं रहता -------------------------------------- १३८
ज्ञानीके देशादिका वप्रकर्ष कोई प्रतिबन्ध नहीं -- १३९
ज्ञानस्वभावके कारण आत्मा सर्वज्ञसर्वदर्शी --- १४०
केवली शेष किन कर्मोंको कैसे नष्ट कर निवृत्त होता है -- १४०
शुक्लध्यानसे कर्म नहीं छिदता, ऐसा वचन अनुचित --- १४१
सुखीभूत निर्वृत्तिजीव फिर संसारमें नहीं आता -- १४१
कर्मका अभाव हो जानेसे पुनः शरीरका ग्रहण नहीं बनता -- १४२
ज्ञानको प्रकृतिका धर्म मानना असंगत --- १४२
ज्ञानादिगुणोंके अभावमें जीवकी व्यवस्थिति नहीं बनती -- १४३
बिना उपायके बन्धको जानने-मात्रसे कोई मुक्त नहीं होता ------------------------------------ १४३
जीवके शुद्धाशुद्धकी अपेक्षा दो भेद -- १४४
शुद्ध-जीवको अपुनर्भव करनेका हेतु --- १४५
मुक्तिमें आत्मा किस रूपसे रहता है -- १४५
ध्यानका मुख्य फल और उसमें यत्नकी प्रेरणा -- १४६
ध्यान-मर्मज्ञ योगियोंका हितरूप वचन --- १४६
परब्रह्मकी प्राप्तिका उपाय --- १४७
आत्मा ध्याविधिसे कर्मोंका उन्मूलक कैसे? -- १४७
विविक्तात्माका ध्यान अचिन्त्यादि फलका दाता -- १४७
उक्त ध्यानसे कादेवका सहज हनन -- १४८
वाद-प्रवादको छोड़कर अध्यात्म-चिन्तन- की प्रेरणा --- १४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विद्वानों को सिद्धिके लिए सदुपाय कर्तव्य -- १४८
अध्यात्म-ध्यानसे भिन्न सदुपाय नहीं --- १४९
उक्त ध्यानकी बाह्य सामग्री --- १४९
बुद्धिके त्रेधा संशोदकको ध्यानकी प्राप्ति -- १५०
विद्वत्ताका परम फल आत्मध्यानरति -- १५१
मूढचेतों और अध्यात्मरहित पंडितोंका संसार क्या?--१५१
ज्ञानबीजादिको पाकर भी कौन सद्ध्यानकी खेती नहीं करते ---------------------------------- १५१
भोगासक्तिमें ध्यान-त्यागी विद्वानोंके मोहको धिक्कार -- १५२
मोही जीवों-विद्वानों आदिकी स्थिति--- १५२
ध्यानके लिए तत्त्वश्रुतिकी उपयोगिता -- १५३
भोगबुद्धि त्याज्य और तत्त्वश्रुति ग्राह्य --- १५३
ध्यानका शत्रु कुतर्क त्याज्य -- १५४
मोक्षतत्त्वका सार --- १५४

८. चारित्राधिकार

मुमुक्षुको जिनलिङ्ग-धारण करना योग्य -- १५६
जिनलिङ्गका स्वरूप -- १५६
जिन-दीक्षा देनेके योग्य गुरु और श्रमणत्वकी प्राप्ति -- १५७
श्रमणके कुछ मूलगुण --- १५७
मूलगुणोंके पालनमें प्रमादी मुनि छेदोपस्थापक -- १५८
श्रमणोंके दो भेद सूरि और निर्यापक--- १५८
चारित्रमें छेदोत्पत्तिपर उसकी प्रतिक्रिया -- १५९
विहारका पात्र श्रमण -- १५९
किसी योगीके श्रमणताकी पूर्णता होती है -- १६०
निर्ममत्व-प्राप्त योगी किनमें राग नहीं रखता -- १६०
अशनादिमं प्रमादचारी साधुके निरन्तर हिंसा -- १६१
यत्नाचारीकी क्रियाएँ गुणकारी, प्रमादी की दोषकारी -- १६१
पर-पीडक साधुमें ज्ञानके होते हुए भी चारित्र मलिन -- १६१
भवाभिनन्दी मुनियोंका रूप -- १६२
भवाभिनन्दियों द्वारा आदृत लोकपंक्तिका स्वरूप -- १६३
धर्मार्थ लोक-पंक्ति और लोक-पंक्तिके लिए धर्म -- १६३
मुक्ति-मार्गपर तत्पर होते हुए भी सभीको मुक्ति नहीं-- १६४
भवाभिनन्दियोंका मुक्तिके प्रति विद्वेष -- १६४
जिनके मुक्तिके प्रति विद्वेष नहीं वे धन्य -- १६४
मुक्तिमार्गको मलिनचित्त मलिन करते हैं -- १६७
मुक्तिमार्गके आराधना तथा विराधनका फल -- १६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मार्की मलिनतासे होनेवाले अनर्थका सूचन -- १६७
हिंसा-पापका बन्ध किसको और किसको नहीं --- १६८
पूर्व कथनका स्पष्टीकरण -- १६९
अन्तरंग-परिग्रहको न छोड़कर बाह्यको छोड़नेवाला प्रमादी -------------------------------------- १६९
अन्तःशुद्धिके बिना बाह्यशुद्धि अविश्वसनीय -- १७०
प्रमादी तथा निष्प्रमादी योगीकी स्थिति --- १७०
जीवघात होनेपर बन्ध हो न भी हो, परिग्रहसे उसका होना निश्चित ---------------------------- १७१
एक भी परिग्रहके न त्यागनेका परिणाम -- १७१
चेलखण्डका धारक साधु निरालम्ब-निरारम्भ नहीं हो पाता ------------------------------------ १७२
वस्त्र-पात्र-ग्राही योगीके प्राणघात और चित्तविक्षेप अनिवार्य ------------------------------------- १७२
विक्षेपकी अनिवार्यता और सिद्धिका अभाव -- १७२
जिसका ग्रहण-त्याग करते कोई दोष न लगे उसमें प्रवृत्तिकी व्यवस्था ------------------------- १७३
कौन पदार्थ ग्रहण नहीं करना चाहिए --- १७४
कायसे भी निस्पृह मुमुक्षु कुछ नहीं ग्रहण करते -- १७४
स्त्रियोंका जिनलिङ्ग-ग्रहण सव्यपेक्ष क्यों?-- १७४
पूर्वप्रश्न का उत्तर : स्त्री पर्यायसे मुक्तिन होना आदि--- १७५
कौन पुरुष जिनलिङ्ग-ग्रहणके योग्य -- १७७
जिनलिङ्ग ग्रहणमें बाधक व्यङ्ग --- १७८
व्यङ्गका वास्तविक रूप -- १७८
व्यावहारिक व्यंग सल्लेखनाके समय अव्यंग नहीं होता--------------------------------------- १७९
कौन श्रमण अनाहार कहे जाते हैं --- १७९
केवलदेह-साधुका स्वरूप -- १८०
केवलदेह-साधुकी भिक्षाचर्याका रूप-- १८०
वर्जित मांस दोष ---१८१
मधु-दोष तथा अन्य अनेशनीय पदार्थ --१८१
हस्तगतपिण्ड दूसरेको देकर भोजन करनेवाला यति दोषका भागी ----------------------------- १८३
बाल-वृद्धादि यतियोंको चारित्राचरणमें दिशाबोध -- १८४
स्वल्पलेषी यति कब होता है -- १८४
तपस्वीको किस प्रकारके काम नहीं करने -- १८४
आगमकी उपयोगिता और उसमें सादर प्रवृत्तिकी प्रेरणा -- १८५
समान अनुष्ठानके होनेपर भी परिणामादिसे फल-भेद --- १८८
बुद्धि, ज्ञान और असम्मोहके भेदसे सारे कर्म भेदरूप -- १८९
बुद्धि, ज्ञान और असम्मोहका स्वरूप --- १८९
बुद्ध्यादिपूर्वक कार्योंके फलभेदकी दिशा-सूचना --- १८९
बुद्धिपूर्वक सब कार्य ससारफलके दाता --- १९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञानपूर्वक कार्य मुक्तिहेतुक -- १९०
असम्मोह-पूर्वक कार्य निर्वाणसुखके प्रदाता --- १९०
भवातीतमार्ग-गामियोंका स्वरूप -- १९१
भवातीतमार्ग-गामियोंका मार्ग सामान्यकी तरह एक ही ------------------------------------- १९१
शब्दभेदके होनेपर भी निर्वाण-तत्त्व एक ही है --- १९१
विमुक्तादि शब्द अन्वर्थक --- १९२
निर्वाण-तत्त्व तीन विशेषणोंसे युक्त -- १९३
असम्मोहसे ज्ञात-निर्वाण-तत्त्व में कोई विवाद तथा भेद नहीं होता --------------------------- १९३
निर्वाण मार्गकी देशनाके विचित्र होनेका कारण -- १९३
उक्त चारित्र व्यवहारसे मुक्तिहेतु, निश्चय से विविक्त चेतनका ध्यान --------------------------- १९४
व्यावहारिक चारित्रके दो भेद -- १९४
कौन चारित्र मुक्तिके अनुकूल और कौन संसृति के -- १९५
जिनाभाषित-चारित्र कैसे मुक्तिके अनुकूल है -- १९५
उक्त व्यवहार-चारित्रके बिना निश्चय-चारित्र नहीं बनता --------------------------------------- १९५
उक्त चारित्रके अनुष्ठाता योगीकि स्थिति --- १९६
९. चूलिकाधिकार
मुक्तात्मा दर्शन-ज्ञान-स्वभावको लिए सदा आनन्दरूप रहता है -------------------------------- १९७
मुक्तात्माका चैतन्य निरर्थक नहीं --- १९७
चैतन्यको आत्मा का निर्थक स्वभाव मानने पर दोषापत्ति ------------------------------------- १९८
सत्का अभाव न होनेसे मुक्तिमें आत्माका अभाव नहीं बनता-------------------------------- १९८
चन्द्रकान्ति और मेघके उदाहरण-द्वारा विषयका स्पष्टीकरण ----------------------------------- १९९
आत्मापर छाये कर्मोको योगी कैसे क्षणभरमें धुन डालता है ---------------------------------- १९९
योगीके योगका लक्षण --- २००
योगसे उत्पन्न सुखकी विशिष्टता --- २००
सुख-दुःखका संक्षिप्त लक्षण --- २००
उक्त लक्षणकी दृष्टिसे पुण्यजन्यभोगों और योगजन्य ज्ञानकी स्थिति --------------------------- २०१
निर्मलज्ञान स्थिर होनेपर ध्यान हो जाता है --- २०१
भोगका रूप और उसे स्थिर-वास्तविक समझनेवाले -- २०१
यह संसार आत्माका महान् रोग -- २०२
सर्व संसार-विकारों का अभाव होने पर मुक्तजीवकी स्थिति ----------------------------------- २०२
उदाहरण-द्वारा पूर्वकथनका समर्थन --- २०२
किसके भोग संसारका कारण नहीं होते --- २०३
भोगोंको भोगता हुआ भी कौन परम पदको प्राप्त होता है --------------------------------- २०३
भोगोंको तत्त्व-दृष्टिसे देखनेवालोंकी स्थिति -- २०३
भोग-मायासे विमोहित जीवकी स्थिति -- २०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्मसे उत्पन्न भोग भी दुःख परम्पराका दाता -- २०४
विवेकी विद्वानोंकी दृष्टि में लक्ष्मी और भोग --- २०४
भोग-संसारसे सच्चा वैराग्य कब उत्पन्न होता है -- २०५
निर्वाणमें परमाभक्ति और उसके लिए कर्तव्य --- २०५
ज्ञानी पापोंसे कैसे लिप्त नहीं होता -- २०६
कौन तत्त्व किसके द्वारा वस्तुतः चिन्तन के योग्य है -- २०६
परमतत्त्व कौन और उससे भिन्न क्या--- २०७
मुमुक्षुओंको किसी भी तत्त्वमें आग्रह नहीं करना --- २०७
आग्रह-वर्जित तत्त्वमें कर्ता-कर्मादिका विकल्प नहीं -- २०७
आत्मस्थिति-कर्म, वर्गणाएँ कभी आत्मतत्त्वको प्राप्त नहीं होतीं ------------------------------- २०८
कर्मजन्य स्थावर विकार आत्माके नहीं बनते --- २०८
जीवके रागादिका-परिणामोंकी स्थिति -- २०८
जीवके कषायादिक-परिणामोंकी स्थिति --- २०९
कषाय-परिणामोंका स्वरूप -- २०९
कालुष्य और कर्ममें-से एकके नाश होनेपर दोनोंका नाश ------------------------------------ २०९
कलुषताका अभाव होनेपर परिणामोंकी स्थिति --- २०९
कलुषताका अभाव हो जानेपर जीवकी स्थिति -- २१०
आत्माके शुद्धस्वरूपकी कुछ सूचनता -- २१०
आत्माकी परंज्योतिका स्वरूप -- २१०
स्वस्वभावमें स्थित पदार्तोंको कोई अन्यथा करनेमें समर्थ नहीं -------------------------------२११
मिलनेवाले परद्रव्योंसे आत्माको कैसे अन्यथा नहीं किया जा सकता --------------------------२११
भिन्न ज्ञानोपलब्धिसे देह और आत्माका भेद -- २१२
कर्म जीवके और जीव कर्मके गुणंको नहीं घातता --- २१२
जीव और कर्ममें पारम्परिक परिणामकी निमित्तता न रहनेपर मोक्ष -------------------------- २१२
युक्त-भावके साथ आत्मा की स्पठिकसमतन्मयता --- २१३
आत्माको आत्मभावके अभ्यासमें लगाना आवश्यक --- २१३
कर्ममलसे पूर्णतः पृथक् हुआ आत्मा फिर उस मलसे लिप्त नहीं होता ------------------------ २१३
घटोपादन-मुक्तिकाके समान कर्मका उपादान कलुषता -- २१४
कषायादि करता हुआ जीव कैसे कषायादिरूप नहीं होता?-------------------------------------२१४
सर्वकर्मोंका कर्ता होते हुए कौन निराकर्ता होता है -- २१५
विषयस्थ होते हुए भी कौन लिप्त नहीं होता --- २१५
देह-चेतनके तात्त्विक भेद-ज्ञाताकी स्थिति --- २१६
जीवके त्रिविध भावोंकी स्थिति और कर्तव्य --- २१६
निरस्ताखिलकल्पमष-योगीका कर्तव्य --- २१६
इन्द्रिय-विषयोंके स्मरणकर्ताकी स्थिति -- २१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोगको न भोगने-भोगनेवाले किन्हीं दोकी स्थिति -- २१७
इन्द्रिय-विषयोंके स्मरण-निरोधककी स्थिति -- २१७
भोगको भोगता हुआ कौन बन्धको प्राप्त होता है कौन नहीं --------------------------------- २१८
विषयोंको जानता हुआ ज्ञानी बन्धको प्राप्त नहीं होता -- २१८
महामूढ इन्द्रिय-विषयोंको न ग्रहण करता हुआ भी बन्धकर्ता -------------------------------- २१८
किसका प्रत्याख्यानादि कर्म व्यर्थ है--- २१९
दोषोंके प्रत्याख्यानसे कौन मुक्त है -- २१९
दोषोंके विषयमें रागी-वीतरागीकी स्थिति -- २२०
औदयिक और पारिणामिक भावोंका फल --- २२०
विषयानुभव और स्वात्मानुभवमें उपादेय कौन -- २२०
वैषयिक ज्ञान सब पौद्गलिक -- २२१
मानवोंमें बाह्यभेदके कारण ज्ञानमें भेद नहीं होता -- २२१
किस ज्ञानसे ज्ञेयको जानकर उसे त्यागा जाता है -- २२२
विकारहेतुके देशच्छेद तथा मूलच्छेदका परिणाम -- २२२
देशच्छेद और मूलच्छेदके विषयका स्पष्टीकरण -- २२३
किनका जन्म और जीवन सफल है -- २२४
ग्रन्थ और ग्रन्थकारके अभिप्रतेरूप प्रशस्ति -- २२४
भाष्यका अन्त्यमंगल और प्रशस्ति -- २२७
परिशिष्ट -- २२९ से २३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org